डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–12 मई, 2020)

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में मुख्य अंतर

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद चुंबक के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की तरह विपरीत है। प्रगतिवादीवादी काव्य की सपाटबयानी तथा जीवन और समस्याओं की अभिव्यक्ति की एकरसता के खिलाफ प्रयोगवादी आंदोलन का उदय 'तारसप्तक' के प्रकाषन (सन् 1943) से हुआ। प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में निम्नलिखित अंतर पाये जाते हैं–

1. प्रगतिवाद के केन्द्र में मार्क्स की विचारधारा क्रियाषील थी। जर्मनी के कार्ल मार्क्स ने महज दो वर्गों की बात की। एक षोषक और दूसरा षोषित वर्ग। मार्क्स की दृष्टि में षोषण और यातना का अंत तभी होगा जब क्रांति होगी और क्रांति तभी होगी जब पूरी दुनिया के मजदूर एक होंगे। उत्पादन के लाभ में समान वितरण होगा। साम्यवाद या समाजवाद की स्थापना तभी होगी। इसके विपरीत प्रयोगवाद विचारधारा मुक्त या वाद मुक्त कविता आंदोलन है। इसपर एजरा पाउंड, इलियट, साइमन द बउआ तथा फ्रायड के मनोविज्ञान तथा हेडेगर और सार्त्र के अस्तित्ववाद का कमोवेष प्रभाव देखा जा सकता है। फ्रायड ने मनोविष्लेषण की प्रक्रिया में यह घोषित किया कि 'यौन भावना से ही सभी काम प्रेरित होते हैं।'

2. प्रगतिवाद के केन्द्र में समाज था, इसलिए इसमें युगधर्म और हुंकार के साथ मानवतावाद, समाजवाद और साम्यवाद की वकालत की गयी है। इसके ठीक विपरीत प्रयोगवाद में समाज की अपेक्षा व्यक्ति केन्द्र में है। प्रगतिवाद में सामाजिक चष्में से दुनिया और उसकी समग्र गतिविधियों को देखा जाता है, इसलिए उसमें सत्ता और राजनीति के खिलाफ व्यंग्य भी है और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना भी है। धर्म को कोढ़ माना गया है, इसलिए धर्म के लिए कहीं कोई स्पेष नहीं है। प्रयोगवाद में व्यक्ति के चष्में से समाज और दुनिया को देखा गया है। व्यक्ति के व्यक्तित्व, अस्तित्व, स्वतंत्रता और अपनेपन की पहचान आदि मानवमूल्यों को बखूबी तरजीह दी गयी है।

3. युग चेतना और संपूर्ण युग की बात मूल रूप से प्रगतिवाद में की जाती है, जबकि प्रयोगवाद में युग की जगह क्षण या क्षणिक अनुभूतियों को महत्त्व दिया जाता है। प्रयोगवादी कवि क्षण को पूरा जीना चाहते हैं संपूर्ण युग को नहीं। इसलिए यहां राजनीतिक चेतना और व्यंग्य की जगह 'क्षणिकता का बोध' प्रायः कविताओं में मिलता है। 'क्षण' समय का सबसे छोटा रूप है, जिसे प्रगतिवादी कवि छोड़ना नहीं चाहता बल्कि समय की तीव्र गति के साथ जीना चाहता है। इसी प्रक्रिया में वह नये पथ का सृजन भी करता है और उसके लिए प्रेरित भी करता है। 'कितनी नावों में कितनी बार' कविता में अनंत यात्रा की प्रक्रिया में अनंत सत्य और अनंत मूल्यों की खोज है।

4. प्रगतिवाद में दाम्पत्यमूलक प्रेम है और उसके केन्द्र में सर्वहारा वर्ग के लोग हैं। इसलिए यहां सहज स्वाभाविक प्रेम है। लोक समर्पण से युक्त प्रेम है, जबकि प्रयोगवाद में षहरी और बौद्धिक प्रेम है। प्रेम का किस्म षहरी, नितांत वैयक्तिक और बौद्धिक समर्पण से युक्त है। दाम्पत्यमूलक प्रेम या सर्वहारा के लिए सहज प्रेम या समर्पण यहां बिल्कुल नहीं है।

बौद्धिक समर्पण का मूल्य और समाज से जुड़ने या महत्त्व पाने की ललक बखूबी अभिव्यक्त है।

5. निम्न वर्ग की चेतना यानी सर्वहारा वर्ग की चेतना प्रगतिवाद के केन्द्र में है, जबकि प्रयोगवाद के केन्द्र में षहरी मध्यवर्ग। मध्यम वर्ग के प्रति मार्क्स की दृष्टि कभी अच्छी नहीं रही है। उनकी नजर में सर्वहारा सभी तरह के उत्पादन के केन्द्र में है, किन्तु उसे उसका उचित आर्थिक लाभ नहीं मिलता है। इसी से प्रगतिवाद में साम्यवादी क्रांति की वकालत की गई है। इसके ठीक उलट प्रयोगवाद में सर्वहारा का चित्रण कम मिलता है। षहरी मध्यवर्ग पूँजीपति की तर्ज या ढ़ंग पर चलने वाला जीव है। इसी से प्रयोगवाद में ग्रामीण जीवन के यथार्थ की जगह षहरी जीवन षैली में 'कैफे हाउस' आदि महत्त्वपूर्ण है। प्रयोगवादी कविता में भले निम्नवर्ग की चेतना–संवेदना न मिले किन्तु संपूर्ण प्रकृति, संस्कृति, समर्पणबोध के साथ ग्रामीण ठेठ षब्दों के प्रयोग से ग्रामीण भाषा और उसकी प्रकृति जीवंत है।

6. प्रगतिवाद में संवेदना अर्थात् भाव का महत्त्व है, षिल्प का नहीं, जबकि प्रयोगवाद में षिल्प का अत्यधिक महत्त्व है। प्रगतिवाद में जीवन और समस्याओं को सपाट रूप में चित्रित किया गया है और मार्क्सवादी साम्यवाद की एकरसता को अधिक तरजीह दी गयी है। किन्तु प्रयोगवाद में व्यक्ति के चष्में से ही सही जीवन की विविधता व्यापक रूप में अभिव्यक्त है। नये जीवन की विविधता के साथ नये षिल्प और अनुभूति की गहराई का उपयोग मिलता है। नये प्रयोगों, बिम्बों, प्रतीकों, लाक्षणिकता के प्रयोग से कवियों ने समाज और जीवन के यथार्थ और जीवन–संघर्ष की सार्थकता प्रस्तुत की है। प्रयोगवादी षिल्प और काव्य सौंदर्य का नजारा देखने के लिए प्रस्तुत है कुछ पंक्तियां– *अगर मैं तुमको ललाती साँझ के नभ की अकेली/तारिका/अब नहीं कहता,/या षरद के भोर की नीहार–न्हायी कुँई,/टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो/ नहीं कारण की मेरा हृदय उथला या सूना है/या कि मेरा प्यार मैला है।/बल्कि केवल यही; ये उपमान मैले हो गये हैं।/देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।/कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।'* षिल्प के प्रति विषेष आग्रह को देखकर ही आलोचकों ने प्रयोगवादी कवियों को रूपवादी (Formist) कहा। इस प्रकार प्रयोगवाद में समाज की तुलना में व्यक्ति को, विचारधारा के स्तर पर अनुभव को और विषय वस्तु के धरातल पर कलात्मकता को प्रमुखता मिली।

7. प्रगतिवादी कवियों ने जनसामान्य की वकालत में 'अभिधा' षब्द षक्ति यानी सरल और सहज भाषा में अपनी कविता की है, जो जन साधारण के लिए संप्रेषणीय था। प्रयोगवादी कवियों ने लक्षणा–व्यंजना में कविता की है, जो सहज संप्रेषणीय नहीं है। इसी से यहां बौद्धिकता की मांग की गयी है।

8. प्रगतिवाद में प्रतीकों का निषेध है, जबकि प्रयोगवाद में प्रतीकों की भरमार है। नये बिम्ब और नये प्रतीकों के माध्यम से प्रयोगवादी कवियों ने काव्य में षिल्पगत सौंदर्य या कलात्मकता की प्रतिष्ठा की है।

9. प्रगतिवादी कविता में लोक उपमानों पर बल दिया गया है, जबकि प्रयोगवादी कविता में पुराने उपमानों की जगह नये उपमानों की सृष्टि कर अर्थ सौंदर्य की प्रतिष्ठा की है।

10. नये प्रयोग की छवि पंत और निराला की कुछ कविताओं में मिलती है जबकि प्रयोगवादी कविता के केन्द्र में प्रयोगषीलता का आग्रह दिखता है।

इस प्रकार प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्य आंदोलन के अंतर से हम दोनों युग के काव्य सौंदर्य और उनकी विषिष्टताओं को समझकर तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं।

दिनांक : 12/05/2020 — **डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**